ORIGINAL RESEARCH PAPER

Journalism

आजाद भारत में छत्तीसगढ़ की साहित्यिक पत्रकारिता (वर्ष 1947 से 2000 तक)

KEY WORDS: साहित्य, पत्रकारिता एवं व्यापार

राकेश कुमार*

पी–एच.डी. शोधार्थी पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर, छत्तीसगढ *Corresponding Author

ABSTRACT

छत्तीसगढ़ में पत्रकारिता की शुरुआत "छत्तीसगढ़ मित्र" नामक हिंदी की मासिक पत्रिका के प्रकाशन से प्रारंभ हुई। जिसका प्रकाशन सन् 1900 में आरंभ किया गया। इसके प्रकाशक पंडित माधवराव सप्रे थे जिन्होंने इस पत्रिका को गौरेला–पेंड्रा–मरवाही जिले के पेंड्रा रोड नामक स्थान से निकाला था। इसके बाद आजादी की चाह में यहां से कई पत्र–पत्रिकाओं का प्रकाशन किया गया जो लोगों के दिलों में जगह बनाने में सफल भी रहे। यहां से प्रकाशित पत्र–पत्रिकाओं नें राष्ट्रीय जनचेतना केंद्र के रूप में भी कार्य किया। परंतु आजादी के बाद इस अंचल की पत्रकारिता में भी बहुत कुछ परिवर्तन देखने को मिला। आजादी के बाद की साहित्यिक पत्रकारिता का परिदृश्य लगभग पूरे देशभर में एक सा दिखता है। आजादी से पहले जितने भी साहित्यिक पत्र–पत्रिकाओं का प्रकाशन किया गया वह सामाजिक एवं राजनीतिक उद्देश्य को पूरा करने के उद्देश्य से किये गए। परंतु आजादी के बाद इसमें काफी बदलाव देखने को मिल जाते हैं। जहाँ पहले ज्यादातर साहित्यिक पत्रिकाएं आजादी के प्रति प्रेम रखने वालों द्वारा निकाली गयीं वहीं आजादी के बाद अधिकतर साहित्यिक पत्रिकाएं निजी संस्थाओं द्वारा निकाले जाने लगे। परंतु इन पत्र–पत्रिकाओं के बंद होने की स्थिति जैसे पहले थी वैसे आज भी है। प्रस्तुत शोध में ऐतिहासिक अनुसंधान विधि का प्रयोग कर आजादी के बाद छत्तीसगढ़ राज्य से प्रकाशित साहित्यिक पत्र–पत्रिकाओं का विश्लेषण किया गया। विश्लेषण स्वरूप पाया गया कि आजादी के बाद छत्तीसगढ़ राज्य के अमूल्य साहित्यकारों, पत्रकारों, एवं संपादकों नें भी अपनी लेखनी के माध्यम से भारतीय साहित्य एवं पत्रकारिता जगत को सिंचने का कार्य किया। जिससे आज जो भारतीय साहित्य का समृद्ध रूप हमें दिखाई देता है उसमें वर्ष 1947 से 2000 तक छत्तीसगढ़ से प्रकाशित साहित्यिक पत्र–पत्रिकाओं का विशेष योगदान है।

प्रस्तावना

15 अगस्त 1947 को जब भारत आजाद हुआ तो उसके सामने कई प्रकार की सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक समस्याएं उभर कर सामने आयीं। एक तरफ जहां सरकार के सामने शरणार्थियों को एक बेहतर जिंदगी देने की जिम्मेदारी थी वहीं दूसरी तरफ आपसी मेल–जोल की सद्भावना के विकास की भी जरूरत महसूस की गयी। जिसको दूर करने के लिए कई उपाय किए गए। जिसमें उस समय की पत्र–पत्रिकाएं भी अपना दायित्व निर्वाहन करने में पीछे नहीं थीं। आजादी के पहले जहां पत्रकारिता का लक्ष्य अंग्रेजों को देश से बाहर खदेड़ने की थी। वह अब आजादी के बाद विकास की ओर मुड़ गई। जो परतंत्र से आजादी के बाद कई प्रकार की समस्याओं को दूर करने का लक्ष्य बनाते हुए दिख जाते हैं। पत्रकारिता में अब क्षेत्रीय समस्याओं को समाचार पत्रों में स्थान मिलने लगा और इसने शासन और समाज के बीच संपर्क करनें के रूप में अपना स्थान प्राप्त कर लिया। इस कड़ी में छत्तीसगढ़ भी पीछे नहीं था। इस राज्य के कई भागों से कुछ ऐसे पत्र–पत्रिकाओं का संपादन एवं प्रकाशन किया गया। जिसकी वजह से यहां के साहित्यकारों एवं पत्रकारों नें भारतीय साहित्य को बहुत कुछ दिया। जिनमें प्रमुखता से बिलासपुर के प्रसिद्ध साहित्यकार एवं लेखक श्रीकांत वर्मा का नाम भारतीय साहित्य जगत में बड़े ही आदर के साथ लिया जाता है। श्रीकांत वर्मा हिन्दी साहित्य में कथाकार, गीतकार और एक समीक्षक के रूप में जाने जाते हैं। वहीं सुप्रसिद्ध साहित्यकार, कवि और पत्रकार श्री श्यामलाल चतुर्वेदी को कौन भूलना चाहेगा जिन्होने आजीवन भारतीय साहित्य की सेवा की। इनकी कहानी संग्रह 'भोलवा भोलाराम' भारतीय साहित्य की एक अमूल धरोहर है। इनकी रचनाओं में 'बेटी के बिदा' एक प्रसिद्ध रचना है। 'बेटी के बिदा' के कवि के रुप में वह आज भी लोगों की जुबान पर बसते हैं। इनके साहित्यिक योगदान को देखते हुए भारत सरकार द्वारा इन्हें पद्मश्री पुरस्कार से सम्मानित किया।

शोध प्रविधि

आज हम आप भारतीय साहित्य को जिस रूप में पढ़ते और लिखते हैं वह पहले ऐसा नहीं था। इसको समृद्ध रूप तक पहुँचाने में देश के किसी एक राज्य या भाग का योगदान नहीं है बल्कि देश के हर उस राज्य नें कुछ न कुछ दिया है जहां पर साहित्य से संबंधित रचनाओं एवं पत्र–पत्रिकाओं के प्रकाशन हुए हैं। इस संदर्भ की सत्यता जांचने के लिए लिए शोधकर्ता द्वारा छत्तीसगढ़, मध्यप्रदेश, भोपाल एवं राजधानी दिल्ली से प्रकाशित विशेष रूप से आजाद भारत में छत्तीसगढ़ की साहित्यिक पत्रकारिता से संबंधित पाठ्य–पुस्तकों एवं पत्र–पत्रिकाओं में छपे लेखों का गहन विश्लेषण किया गया। साथ ही छत्तीसगढ़ एवं मध्यप्रदेश के प्रसिद्ध साहित्यिक संपादकों, लेखकों एवं पत्रकारों से आजादी के बाद की छत्तीसगढ़ की साहित्यिक पत्रकारिता के योगदान पर चर्चा की गई। जिनसे प्रत्यक्ष रूप से मिलना संभव नहीं था उनसे दूरभाष के जरिये बात की गयी।

आजाद भारत में छत्तीसगढ़ की साहित्यिक पत्रकारिता

आजादी के वर्ष में ही अर्थात 1947 में ही दीपचंद डागा ने रायपुर से "छत्तीसगढ़ केसरी" नामक साप्ताहिक हिंदी का प्रकाशन प्रारंभ कर दिया था। इसी वर्ष दुर्ग से दो अन्य साप्ताहिक पत्रों का प्रकाशन हुआ "प्रजाबंधु" का तथा केदारनाथ झा चंद्र द्वारा "जिंदगी" नामक हिंदी पत्रिका का। क्योंकि भारत में समाचार पत्रों के प्रकाशन को लेकर नए कानून बनाए जा चुके थे इसलिए अब संपादकों को उनके मतानुसार पत्रों का प्रकाशन नए अवसर के रूप में देखा जाने लगा। वहीं स्वतंत्रता के बाद छत्तीसगढ़ से प्रथम साहित्यिक पत्रिका "श्री" का प्रकाशन रायपुर से हुआ। सन् 1948 में रायपुर से "नवज्योति" नामक मासिक पत्रिका का प्रकाशन हुआ जिसको उस समय के प्रसिद्ध लेखक एवं संपादक श्री घनश्याम प्रसाद श्याम के द्वारा संपादित किया गया था। सन् 1948 में ही चंद्रशेखर तिवारी द्वारा राजनांदगांव से "स्वतंत्र भारत" नामक हिंदी साप्ताहिक पत्र का प्रकाशन किया गया। वहीं सन् 1949 में रायगढ़ से श्री आनंदी सहाय शुक्ला के द्वारा "बापू" नामक मासिक पत्रिका का प्रकाशन किया गया। यह इस समय की प्रसिद्ध मासिक पत्रिका के रूप में जानी गयी। 4 सितंबर 1950 में श्री ठाकुर प्यारेलाल सिंह के द्वारा रायपुर से अर्ध साप्ताहिक "राष्ट्रबंधु" नामक पत्र का संपादन किया गया। यह अखबार 4 वर्षों तक प्रकाशित होता रहा और उसके बाद बंद कर दिया गया। मासिक पत्रिका के रूप में रायपुर से 1950 में "मसीही आवाज" तथा 1950 में ही "साथी" नामक हिंदी मासिक पत्रिका का संपादन राजेंद्र प्रसाद चौबे के द्वारा देखने को मिलता है। इसी क्रम में 1950 में रायपुर से हिंदी मासिक पत्रिका "वंश प्रताप मणिमाला" देखने को मिलता है। सन् 1951 में लाला जगदलपुर में महासमुंद से "सेवक" नामक हिंदी मासिक पत्रिका का प्रकाशन प्रारंभ किया। यह अपने समय की प्रसिद्ध साहित्यिक पत्रिका के रूप में जानी गई। इसी समय "चित्र संसार" नामक हिंदी मासिक पत्रिका का प्रकाशन भी देखने को मिलता है।

बिलासपुर के प्रसिद्ध साहित्यकार एवं लेखक श्रीकांत वर्मा के संपादन में बिलासपुर से त्रैमासिक साहित्यिक पत्रिका "नई दिशा" की शुरुआत सन् 1955 में की गई है। परंतु यह पत्रिका ज्यादा दिनों तक नहीं चल सकी। इस पत्रिका से छत्तीसगढ़ के कई प्रसिद्ध साहित्यकार जुड़े हुए थे। जिसमें श्री गजानन माधव मुक्तिबोध, श्री नरेश मेहता एवं श्री प्रभाकर माचवे जैसे प्रसिद्ध साहित्यकारों का नाम आता है। सन् 1956 में रायपुर से प्रसिद्ध हिंदी मासिक पत्रिका "भारत सेवक" का प्रकाशन देखने को मिलता है। कुछ लेखक इसके संपादक के रूप में श्री चंद्रशेखर आजाद के सहयोगी श्री विश्वनाथ वैश्यपायन को मानते हैं। यह हिंदी मासिक पत्रिका मात्र 4 वर्षों तक ही प्रकाशित हो सकी। एक अन्य मासिक पत्रिका के रूप में सन् 1957 में महासमुंद से "आदर्श भारती" का प्रकाशन किया गया। सन् 1958 में प्रसिद्ध साहित्यिक एवं मासिक पत्रिका "प्रेरणा" का प्रकाशन राजनांदगांव से प्रारंभ हुआ। "अभियान" राजनांदगांव से इसी वर्ष प्रकाशित हुई जो एक हिंदी मासिक पत्रिका थी। सन् 1959 में देवी प्रसाद वर्मा के द्वारा रायपुर से प्रसिद्ध हिंदी मासिक पत्रिका "नया कदम" का प्रकाशन किया गया। इसी वर्ष राजनांदगांव से "भारत केसरी" नामक प्रसिद्ध हिंदी साहित्यिक साप्ताहिक "पत्र" का प्रकाशन किया गया। वहीं अंग्रेजी भाषा की प्रसिद्ध मासिक पत्रिका "रिपब्लिक" का प्रकाशन रायपुर से किया गया। सन् 1960 में "साहू संदेश" नामक हिंदी मासिक पत्रिका दुर्ग से निकाला गया। राम गोपाल तिवारी द्वारा सन् 1960 में "छत्तीसगढ़ सहकारी संदेश" जो एक हिंदी मासिक एवं साहित्यिक पत्रिका थी का प्रकाशन बिलासपुर से किया। मधुकर खैर नें सन् 1962 में "नम" नामक हिंदी मासिक पत्रिका का प्रकाशन रायपुर से किया। मधुकर खैर छत्तीसगढ़ के प्रसिद्ध पत्रकार के रूप में जाने जाते हैं।

सन् 1956 में रायपुर से विभु खरे के द्वारा "हस्ताक्षर" नामक त्रैमासिक साहित्यिक पत्रिका शुरू की गई तथा इसी वर्ष "संज्ञा" नामक साप्ताहिक पत्रिका की शुरुआत हरि ठाकुर के संपादन में आरंभ की गई। जिसे इस समय के कई प्रसिद्ध लेखकों जैसे श्री संतोष कुमार शुक्ला, नरेंद्र देव वर्मा, डॉ. गंगा प्रसाद गुप्ता, विश्वेन्द्र कुमार ठाकुर तथा तारानाथ झा की छाया प्राप्त थी। इसी वर्ष कई प्रसिद्ध मासिक का प्रकाशन हुआ जैसे "साधना" मासिक पत्रिका रायपुर से प्रकाशित, "अनंत" नामक पत्रिका भिलाई से तथा "दुर्ग टाइम्स" का प्रकाशन भी दुर्ग से ही की गई। सन् 1968 में बिलासपुर से एक साहित्यिक पत्रिका "नवआयाम" निकाली गई जिसका प्रकाशन एवं संपादन सुरेश चंद्र शुक्ला तथा डॉ. खरे ने किया था। इसी वर्ष एक मासिक पत्रिका "विजयंत" का प्रकाशन रायपुर से श्री रामदास शर्मा ने किया। बिलासपुर से त्रैमासिक पत्रिका "भोजली" का प्रकाशन डॉ. विनय पाठक एवं मासिक "ज्ञानयुग" भी बिलासपुर से निकाली गई। बिलासपुर से ही श्री फूलचंद पाठक के द्वारा "दिल और पत्थर" नामक हिंदी साप्ताहिक का प्रकाशन किया गया। यह एक शुद्ध साहित्यिक पत्रिका थी जिसमें कहानी, कविता एवं आलोचनाओं का प्रकाशन तथा समीक्षा छापी जाती थी। सन् 1972 में बिलासपुर से "धर्मसत्ता" नामक मासिक पत्र का प्रकाशन किया गया। सन् 1977 में अंबिकापुर से साप्ताहिक "सरगुजा वाणी" का प्रकाशन प्रारंभ होता है तथा राजनांदगांव से साप्ताहिक "अनमोल रोटी" का प्रकाशन लालाराम सोनी द्वारा किया गया। राजनांदगांव से साप्ताहिक पत्र "माटी की कसम" का प्रकाशन संपतलाल शर्मा द्वारा भी देखने को मिलता है।

आपातकाल के दौरान भारत में कई पत्रों का प्रकाशन बंद कर दिया गया जो शासन के शिकार हुए परंतु आपातकाल के खत्म होते ही पुनः पत्रों का प्रकाशन आरंभ होने लगा। आपातकाल के बाद की प्रसिद्ध हिंदी साहित्यिक एवं साप्ताहिक पत्रों में राजनांदगांव से "नांदगांव दर्शन" जिसको गुरुदयाल जगरान द्वारा तथा "छत्तीसगढ़ अंचल" शरद तिवारी के प्रकाशन से देखने को मिलता है। इन पत्रों में समाचार के साथ–साथ साहित्यिक रचनाओं को भी जगह दी गई। सन् 1979 में त्रैमासिक पत्रिका "मानस मधु" का प्रकाशन किया गया। जिसके सम्पादकीय मंडल में प्रोफेसर बाबूलाल शुक्ला, डॉ श्यामसुंदर दूबे, प्रोफेसर सरोज कुमार मिश्र एवं श्री बजरंग बहादुर सिंह सम्मिलित थे। इसी वर्ष जगदलपुर से "कौपलों के स्वर" नामक साहित्यिक पत्रिका का प्रकाशन प्रारंभ हुआ। इस मासिक पत्रिका में हिंदी भाषा के साथ–साथ छत्तीसगढ़ी, हल्बी, भतरी आदि भाषाओं में भी रचनाएं प्रकाशित होती थीं। सन् 1979 को रायपुर से श्री नंदकिशोर तिवारी के संपादन में "इत्यमलाम" नामक त्रैमासिक पत्रिका शुरू हुई। सन् 1981 में "गांव की गुहार" नामक मासिक पत्र का प्रकाशन संयुक्त रूप से श्री रामचंद्र चंद्राकर के द्वारा की गई। सन् 1982 में श्री केयूर भूषण के द्वारा मासिक पत्र "आवाज औरत" की रायपुर से संपादित की गई। इसके संपादन मंडल में शशि शायल, अनुप्रभा यादव तथा रोजी लियो थीं। यह छत्तीसगढ़ महिला जागृति संगठन की पत्रिका थी। 30 अंकों के बाद यह त्रैमासिक मासिक पत्रिका बंद हो गई। बिलासपुर से त्रैमासिक पत्रिका "सम्बद्ध" का प्रारंभ श्री प्रताप ठाकुर के द्वारा की गई। जिसकी कीमत तीन रुपये थी। सन् 1987 में कई पत्रों का संपादन एवं प्रकाशन देखा जा सकता है। जिसमें "व्यंगकार", "बस्तर किरण", "गोधुली" "संदेश", "बस्तर प्रहरी", "बस्तर जागृति", "बस्तर ज्वाला", "नूतन बस्तर" आदि के साथ–साथ अन्य कई पत्रों का प्रकाशन हुआ। स्पष्ट होता है कि 1987 जगदलपुर की पत्रकारिता के लिए मील का पत्थर साबित हुआ।

सन् 1987 में दुर्ग से श्री महावीर अग्रवाल के द्वारा अनियतकालीन साहित्यिक पत्रिका "सापेक्ष" शुरू की गई। इसका प्रकाशन दुर्ग से किया गया। यह आज भी छत्तीसगढ़ की प्रसिद्ध साहित्यिक पत्रिका के रूप में जानी जाती है। इसके कबीर, त्रिलोचन, साम्प्रदायिक दंगों के विरुद्ध, बाबा नागार्जुन अंक बहुत प्रसिद्ध हैं। सन् 1988 में श्री संजय यादव द्वारा "दिन दोपहर" नामक साप्ताहिक पत्र का प्रारंभ किया गया। संजय श्रीवास्तव द्वारा "अविनाशी किरण" नामक पाक्षिक तथा श्री प्रमोद श्रीवास्तव द्वारा "मुक्त सरोवर" नामक पाक्षिक पत्र का प्रकाशन देखने को मिलता है। सन् 1989 में श्री ए. एस. भारती के संपादन में "प्रादेशिक विकास एवं समस्याएं" नामक त्रैमासिक पत्रिका का संपादन रायपुर से किया गया। गुरु घासीदास विश्वविद्यालय बिलासपुर से ही श्रीमती डॉ. गोपा बागची के द्वारा "परिसर वार्ता" का संपादन किया गया। जिसमें साहित्य के साथ–साथ समकालीन सामाजिक एवं राजनीतिक पहलुओं पर आधारित लेखों का प्रकाशन किया जाता था। इसी वर्ष कोरबा से हिंदी भाषा को बढ़ावा देने के लिए "हिंदी प्रतिष्ठा" नामक साप्ताहिक हिंदी साहित्यिक पत्र का प्रकाशन प्रारंभ हुआ। जिसके प्रधान संपादक श्री कमलेश यादव एवं संपादक श्री मदन शर्मा थे। सन् 1990 में "बिलासपुर जनसंदेश" नामक साप्ताहिक पत्र की शुरुआत बिलासपुर से प्रारंभ की गई जिसके प्रधान संपादक श्री राजकुमार कलवानी एवं संपादक श्री हेमंत कलवानी थे। सन् 1990 में रायपुर से श्री राजनारायण मिश्र द्वारा संपादित "दैनिक रौद्रमुखी स्वर" का प्रकाशन प्रारंभ हुआ। सन् 1993 को श्री गंगाप्रसाद ठाकुर द्वारा बिलासपुर से "समरगाथा" नामक साप्ताहिक शुरू किया गया। श्री ठाकुर अपने समय के एक सक्रिय लेखक एवं पत्रकार थे। इस समय के अनुसार अन्य पत्रों में जगदलपुर का "निर्भीक" समाचार, धमतरी का "न्यू महानदी टाइम" पत्र का नाम उल्लेखनीय है।

सन् 1996 में रायपुर से साप्ताहिक साक्षरता पत्र "पढ़े ल जाबो" का प्रकाशन प्रारंभ किया गया। इसके संपादक मंडल में श्री हरि ठाकुर, शांति यदु तथा श्री प्रेम पाठक शामिल थे। सन् 1996 में ही "सद्भावना दर्पण" नामक पत्रिका का संपादन श्री गिरीश पंकज के द्वारा प्रारंभ की गई। यह अविभाजित मध्यप्रदेश की सर्वश्रेष्ठ साहित्यिक पत्रिका के रूप में पहचानी गई। इसमें कई भाषाओं के साहित्य के लिए विशेषांक लिखे जाते थे। इसी वर्ष एक अन्य अनियतकालीन "सूत्र" नामक साहित्यिक पत्रिका श्री विजय सिंह के संपादन में प्रारंभ किया गया। सन् 1997 में रायपुर से एक त्रैमासिक पत्रिका "रशिम प्रवाह" का प्रारंभ श्री सुरेश तिवारी के संपादन में हुआ। इसमें साहित्यिक रचनाओं के लेख उचित मात्रा में लिखे गए। सन् 1999 में बिलासपुर से श्री कालीचरण यादव के संपादन में "मड़ई" नामक वार्षिक पत्रिका का प्रकाशन प्रारंभ किया गया। तभी श्री गुरु वीर चावला द्वारा

"जनसंदेश दर्पण" नामक मासिक पत्र निकाला गया जो दो–तीन अंकों के बाद ही बंद हो गई। इसी वर्ष एक त्रैमासिक पत्रिका का प्रकाशन विजय प्रताप सिंह के द्वारा "पंखुड़ियां" के रूप में प्रारंभ किया गया। बिलासपुर से प्रकाशित होने वाली यह एक पूर्ण साहित्यिक पत्रिका थी जिसका मूल उद्देश बिलासपुर के साहित्यिक विकास के साथ–साथ प्रदेश के साहित्य को देशवासियों के सामने रखना था परंतु कुछ वर्षों के बाद आर्थिक कारणों से इसका प्रकाशन बंद करना पड़ गया।

छत्तीसगढ़ी "लोकाक्षर" का प्रकाशन 1999 में हुआ। जिसके संपादन का कार्य नंदकिशोर तिवारी द्वारा किया गया। यह त्रैमासिक पत्रिका के रूप में प्रकाशित हुई। जिसको छत्तीसगढ़ी साहित्य की प्रतिनिधि पत्रिका के रूप में जाना जाता है। वर्तमान में यह पत्रिका अनियमित रूप से प्रकाशित होती है। वर्ष 2000 के प्रारंभिक दिनों में "संकल्प और विकास" का प्रकाशन प्रारंभ हुआ। जिसको गुरु घासीदास विश्वविद्यालय के पत्रकारिता विभाग की अध्यक्ष श्रीमती गोपा बागची के संपादन में गुरु घासीदास विश्वविद्यालय बिलासपुर नें प्रकाशित किया। यह एक साहित्यिक एवं सांस्कृतिक पत्रिका के साथ–साथ विकास उन्मुखी पत्रिका थी। जिसमें पत्रकारिता के लेखों के रूप में सामाजिक एवं पत्रकारिता के पहलुओं पर आधारित लेखों को स्थान दिया जाता था। इसमें पत्रकारिता के विद्यार्थियों के अलावा विश्वविद्यालय के उच्च अधिकारियों के लेख एवं अध्यापकों के ज्ञान को प्रकाशित किया जाता था। छत्तीसगढ़ राज्य की स्थापना (1 नवंबर 2000) के बाद छत्तीसगढ़ राज्य से प्रकाशित होने वाली पहली मासिक पत्रिका के रूप में "पंच मन" का प्रकाशन देखने को मिलता है। जिसका उद्देश्य पंचायती राज संस्थाओं की लक्ष्यों को ध्यान में रखकर किया गया था। यह छत्तीसगढ़ शासन द्वारा प्रकाशित किया जाता था। इसमें छत्तीसगढ़ राज्य की विविधता, कला एवं सांस्कृतिक संस्थाओं की अच्छी खासी लेख हुआ करती थीं। जिसमें शासकीय सूचनाओं को भी जगह दी जाती थीं। इसे छत्तीसगढ़ से प्रकाशित बीसवीं सदी की अंतिम मासिक पत्रिका के रूप में देखा जा सकता है।

निष्कर्ष

उपरोक्त आंकड़ों से यह स्पष्ट हो जाता है कि आजादी के बाद छत्तीसगढ़ संभाग से बहुत बड़ी संख्या में साहित्यिक पत्र–पत्रिकाओं का संपादन एवं प्रकाशन किया गया। जिन्होनें भारतीय साहित्य को समृद्ध करने में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी। आजाद भारत में छत्तीसगढ़ से प्रकाशित पत्र–पत्रिकायें जिन्होंने भारतीय साहित्य को समृद्ध करने में अपनी भूमिका निभाई उनमें लाला जगदलपुरी द्वारा प्रकाशित हिंदी मासिक पत्रिका "सेवक", बिलासपुर के प्रसिद्ध साहित्यकार एवं लेखक श्रीकांत वर्मा के संपादन में बिलासपुर से प्रकाशित त्रैमासिक साहित्यिक पत्रिका "नई दिशा", बिलासपुर से ही श्री फूलचंद पाठक के द्वारा प्रकाशित हिंदी की शुद्ध साहित्यिक साप्ताहिक पत्रिका "दिल और पत्थर", रायपुर से प्रधान संपादक ललित सुरजन एवं संपादक सर्वमित्रा सुरजन द्वारा देशबंधु प्रेस से निकाली गयी पत्रिका "अक्षर पर्व", छत्तीसगढ़ी साहित्य की प्रतिनिधि पत्रिका के रूप में प्रकाशित त्रैमासिक पत्रिका "लोकाक्षर" का स्थान सर्वोपरि है। इन साहित्यिक साप्ताहिक, मासिक एवं त्रैमासिक पत्र–पत्रिकाओं नें हिंदी साहित्य की विविध विधाओं जैसे कहानी, कविता, उपन्यास, एकांकी, रेखाचित्र, जीवनी, आत्मकथा, संस्मरण एवं निबंध के साथ–साथ नवीन पुस्तकों का सृजन, पुस्तकों की आलोचना, समीक्षा, साहित्यिक संगोष्ठीयां, पुस्तक प्रदर्शनी, लोकार्पण, पुरस्कार, कला एवं साहित्य से संबंधित समाचारों को स्थान देकर भारतीय साहित्य को संवारने का काम किया। इन्हीं पत्र–पत्रिकाओं में छपे लेखों नें भारतीय साहित्य के अनमोल रतन के रूप में प्रसिद्ध श्रीकांत वर्मा को दुनिया के सामने पहुँचाने का भी कार्य किया। जिससे आज जो भारतीय साहित्य का समृद्ध रूप हमें दिखाई देता है। उसमें वर्ष 1947 से 2000 तक छत्तीसगढ़ से प्रकाशित साहित्यिक पत्र–पत्रिकाओं का विशेष योगदान है।

संदर्भ सूची

1. पाठक, विमल कुमार (1983). छत्तीसगढ़ी साहित्य का ऐतिहासिक अध्ययन, रायपुरः आशु प्रकाशन
2. श्रीधर, विजयदत्त (1989). मध्यप्रदेश में पत्रकारिता का उद्‌भव और विकास, भोपालः मध्यप्रदेश हिंदी ग्रन्थ अकादमी
3. अनुजा, मंगला (2002). छत्तीसगढ़ पत्रकारिता की संस्कार भूमि, भोपालः माधवराव सप्रे स्मृति समाचार पत्र संग्रहालय एवं शोध संस्थान
4. खंडेलवाल, शलेन्द्र (2005). स्वतंत्रता के बाद छत्तीसगढ़ पत्रकारिता का इतिहास, भोपालः माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं जनसंचार विश्वविद्यालय
5. पंकज, गिरिश (2007). छत्तीसगढ़ के पत्र–पत्रिकाओं की विवरणिका (1947–2005), स्वतंत्र भारत की हिंदी पत्रकारिता (शोध परियोजना), भोपालः माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं जनसंचार विश्वविद्यालय
6. झा, विभाष कुमार (2011). हिंदी पत्रकारिता का इतिहास छत्तीसगढ़, रायपुरः छत्तीसगढ़ राज्य हिंदी ग्रन्थ अकादमी
7. ओझा, लाल बहादुर (2011), हिंदी पत्रकारिता का इतिहास दिल्ली, रायपुरः छत्तीसगढ़ राज्य हिंदी ग्रन्थ अकादमी
8. पाठक, राकेश एवं शिव अनुराग पटेरिया (2016), हिंदी पत्रकारिता का इतिहास मध्यप्रदेश, रायपुरः छत्तीसगढ़ राज्य हिंदी ग्रन्थ अकादमी
9. यादव, सोमनाथ (2017). कहां गये वे लोग, रायपुरः शिक्षादूत ग्रंथागार प्रकाशन